फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें– < http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 264 1/- जून 2010

दिन काटना..... जीवन जीना

★ फरीदाबाद में 24 मई को सैक्टर-28 में प्लॉट 15ए स्थित **शाही एक्सपोर्ट** फैक्ट्री में काम करते-करते मजदूरों के सिर चकराने लगे और बेहोश हो गये। सैक्टर-19 व सैक्टर-8 स्थित अस्पताल में 53 मजदूरों को ले जाया गया। मजदूरों को ऑक्सीजन दी गई और नाजुक स्थिति वाले 41 को अस्पताल में भर्ती किया गया। बेहोश हुओं में अधिकतर महिला मजदूर।

★ नोएडा में 24 मई को सैक्टर-6 में प्लॉट एफ-28 स्थित **एन टी एल इलेक्ट्रोनिक्स** फैक्ट्री में काम करते-करते 6 महिला मजदूर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

★ दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र में ए-205 फेज-1 स्थित **पालम एक्सपोर्ट** फैक्ट्री के फिनिशिंग विभाग में महीने के तीसों दिन सुबह 9½ से अगले रोज सुबह 5 बजे तक ड्युटी। छह-सात महीने हर सेज 19½ घण्टे काम ने एक 22 वर्षीय मजदूर को दिल का रोग दे दिया है और 50 महिला मजदूर मुर्दों की तरह हो गई हैं।

★ गुड़गाँव में उद्योग विहार में प्लॉट 153 फेज-1 स्थित **सरगम एक्सपोर्ट** फैक्ट्री में 13 मई को रात में काम करते-करते दो मजदूर बेहोश हो गये।

★ आई एम टी मानेसर में प्लॉट 24 सैक्टर-5 स्थित **कुमार प्रिन्टर्स** फैक्ट्री में हर मोड़ पर, हर मशीन पर कैमरे लगे हैं। महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते 300 मजदूरों में हर समय डर बना रहता है।

★ दिल्ली, नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियाँ..... **ऋचा ग्लोबल** फैक्ट्री में पानी भी चैन से नहीं पीने देते, मैनेजर शौचालय में घुस कर मजदूरों को निकालता है। **भूरजी सुपरटैक** फैक्ट्री में कार्यरत एक मजदूर के भाई की 14 मई को मृत्यु हो गई तब भी उसे अप्रैल की तनखा नहीं दी, पैसे नहीं दिये। **ज्योति एपरेल्स** फैक्ट्री में गन्दा पानी पीने से मजदूर बीमार हो रहे हैं। शौचालय गन्दे – महिला व पुरुष गार्ड लगा रखे हैं, जल्दी निकलो! साहब लोग बहुत गाली देते हैं, जनरल मैनेजर मार भी देता है।

★ बल्लभगढ, न्यू टाउन, ओल्ड फरीदाबाद स्टेशनों पर ड्युटी के लिये भागमभाग में चलती गाड़ी पर चढना रोज की बात है। ऐसे में तीव्र गति से रफ्तार पकड़ती ई एम यू से गिरना सामान्य है। भीड़ द्वारा जल्दी में रेलवे फाटक पार करना प्रतिदिन की क्रिया..... फरीदाबाद क्षेत्र में ही रेलगाड़ियों से मरने वालों की सँख्या हर रोज एक की मौत के औसत के निकट।

★ भारत सरकार के क्षेत्र में सड़कों पर प्रतिदिन वाहनों की चपेट में आ कर औसतन 320 लोग मर रहे हैं और 3200 बुरी तरह घायल हो रहे हैं। कम चोटें लगनें वालों की सँख्या 32,000 के पार है।

दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में फैक्ट्री मजदूरों के दैनिक जीवन की ऊपर एक हलकी झलक मात्र है। फुटकर मजदूरों, पटरी दुकानदारों की रोजमर्रा की जिन्दगी इससे बदतर नहीं तो बेहतर भी नहीं है। कार्यालय कर्मियों के लिये आवागमन तो फैक्ट्री मजदूरों के समान ही तनाव-खतरे लिये है, दफ्तरों में कार्य तथा स्थितियाँ टेढेपन, उबाऊपन, बोझिलता, नीरसपन में फैक्ट्रियों के समकक्ष ही हैं। किसानों-दस्तकारों का, ग्रामीण गरीबों का दैनिक जीवन आत्महत्या और मरने-मारने पर उतरना की दो अतियों के बीच झूल रहा है। इसलिये "दिन काट रहे हैं" कथन का चलन व्यापक है, बहुत व्यापक है। कहीं कथन में नहीं भी है तो भी व्यवहार में आज यह विश्व में सर्वत्र है। समय काटना, टाइम पास करना का दैनिक जीवन बन जाना वर्तमान की कम तीखी आलोचना है क्या? व्यक्ति के होने अथवा नहीं होने में फर्क नहीं रह जाने से अधिक पीड़ादायक क्या है? यह दुखद स्थिति है, यह त्रासदी है।

हर एक पर हर समय पड़ते अनेकानेक दबावों की एक झलक भी ऊपर दिये फैक्ट्री मजदूरों के दैनिक जीवन में दिखती है। चमत्कार की आस अथवा कुछ नहीं हो सकता-कुछ नहीं बदलेगा की धारणायें इन दबावों की सहज उपज हैं। इसलिये असहायता के दर्शनों का प्रभाव है। धार्मिक रूप में और महान नेता-महान पार्टी रूप में असहायता के दर्शनों का प्रभाव है। प्रभाव है पर समाधान नहीं है......हालात का बद से बदतर होना जारी है। इसलिये नये सिरे से सोचने-विचारने की आवश्यकता दस्तक पर दस्तक दे रही है।

विचारों में असहायता के दर्शनों को कितना ही स्वीकार क्यों न किया जाता हो, व्यवहार में असहायता के दर्शनों को हर समय, हर कदम पर प्रत्येक द्वारा नकारना कम व्यापक नहीं है। व्यवहार से आरम्भ करना कैसा रहेगा? व्यवहार से विचार की ओर बढना कैसा रहेगा?

विचारों में कोई कितना भी व्यक्तिवादी हो, व्यवहार में हर एक को सामाजिक होना ही पड़ता है। वर्तमान में व्यक्ति को इकाई बनाने में जुटी हावी प्रक्रिया भी व्यक्ति पर सामाजिकता थोपती है। थोपी जाती सामाजिकता को विकृत सामाजिकता कहना अधिक सटीक होगा।

अकेले-अकेले हर कोई कितने प्रयास करती-करता है। सामाजिक समस्याओं के निजी समाधानों के लिये प्रत्येक कितने पापड़ बेलती-बेलता है। सामाजिक समस्याओं के सामाजिक समाधान के लिये प्रयास कैसे रहेंगे?

अकेले-अकेले के संग-संग हम अनेक प्रकार के तथा कई स्तर के कदम मिल कर भी उठाते हैं। मिल कर उठाये जाते कदमों में पीछे-पीछे चलना काफी प्रचलन में है। और, इसके दुष्परिणाम हमें अपने-अपने में सिमटने की तरफ धकेलते हैं।

सक्रिय साझेदारी वाले कदम मिल कर उठाना कैसा रहेगा? सक्रिय साझेदारी कैसे होगी? प्रत्येक पर पड़ते दबावों की मोटामोटी पहचान एक-दूसरे का अनादर करने से बचने के लिये आवश्यक लगती है। "अनादर नहीं" – यह मिलने, साथ बैठने, अनुभवों व विचारों को साझा करने का ठोस आधार प्रदान करता लगता है। सक्रिय साझेदारी वाले मिल कर उठाये जाते कदमों की ऐसे में बहार नजर आती है। "अनादर नहीं" से राह का आदर की दिशा में बढना दिन काटने की बजाय जीवन जीने की तरफ बढना है।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

24 फरवरी को जारी आदेश अनुसार पहली जनवरी 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4214 रुपये (8 घण्टे के 162 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4344 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4474 रुपये (8 घण्टे के 172 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4604 रुपये (8 घण्टे के 177 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4734 रुपये (8 घण्टे के 182 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4864 रुपये (8 घण्टे के 187 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते : 1. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रम सचिव, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

यामाहा मोटर्स मजदूर : "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में आई.टी.आई. कियों को कैजुअल वरकर के तौर पर भर्ती करते हैं। साढे सात महीने होने तक ब्रेक कर देते हैं। फिर कम्पनी का भर्ती करने वाला पर्ची बना कर ठेकेदार के पास भेज देता है। मजदूर उसी विभाग में वही काम करता है, कैजुअल वरकर की जगह ठेकेदार के जरिये रखा मजदूर बन कर। तनखा वही रहती है पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के नम्बर बदल जाते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे वरकर के तौर पर साढे सात महीने होने तक फिर ब्रेक कर देते हैं और नये सिरे से कैजुअल वरकर के तौर पर रख लेते हैं। कैजुअल-ठेकेदार के जरिये रखा-कैजुअल-ठेकेदार के....... 10-12 वर्ष से इस तरह से लगातार यामाहा फैक्ट्री में वरकर काम कर रहे हैं। काम स्थाई है, मजदूर अस्थाई हैं। जिस काम के लिये स्थाई मजदूरों की तनखा 25 हजार रुपये है, उसी काम को करते आई.टी.आई. किये कैजुअल अथवा ठेकेदार के जरिये रखे लेबल वाले मजदूरों की तनखा 4734 रुपये है। हैल्परों की तनखा 4214 रुपये और भर्ती सिफारिश पर। कैजुअलों को यामाहा कम्पनी सिर्फ एक कमीज देती है, एक ठेकेदार कम्पनी भी कमीज ही देती है और दूसरी वह भी नहीं। तीन शिफ्ट हैं — ए-शिफ्ट में स्थाई मजदूर ज्यादा हैं तो सी-शिफ्ट में अधिकतर वरकर अस्थाई हैं। बी-शिफ्ट रात 2 बजे समाप्त होती है और सी-शिफ्ट रात 2 बजे आरम्भ होती है। इन शिफ्टों में बहुत दिक्कत — मोटरसाइकिल स्टैण्ड पर मजदूर सोते हैं। शिफ्ट बदलते नहीं, सी-शिफ्ट में हैं तो लगातार सी-शिफ्ट में रहो।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "प्लॉट 21 व 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्रियों में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को तनखा ए टी एम द्वारा और ठेकेदारों के जरिये रखों को नकद देते हैं। ए टी एम वालों को अप्रैल की तनखा 15 मई को दी और नकद वालों को 28-29 मई को जा कर। महीने में 60 से 125 घण्टे ओवर टाइम। ए टी एम वालों की पे-स्लिप में 12-15 घण्टे ओवर टाइम और भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। बाद में पैसे काट लेते हैं और सब घण्टों का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। नकद वालों को पे-स्लिप नहीं देते और उन्हें ओवर टाइम के पैसे सीधे-सीधे सिंगल रेट से। मार्च में किये ओवर टाइम के पैसे 6 मई को जा कर दिये थे और अप्रैल में किये का भुगतान आज 1 जून तक नहीं। लगातार 12 घण्टे से ज्यादा समय तक काम करवाने पर रोटी के 30 रुपये देते थे पर घटा कर 20 रुपये कर दिये हैं। ए टी एम वालों को बोनस में बहुत गड़बड़ी — जिन्हें निकाल देते हैं उन्हें बोनस नहीं देते, कहते हैं कि दिवाली के समय भी ड्युटी पर हो तभी बोनस देंगे। नकद तनखा वालों को तो बोनस देते ही नहीं। यहाँ **गैप, मैसी, कोल्ट्स** आदि के परिधान बनते हैं। वर्षों से काम कर रहे स्थाई मजदूरों को कभी भी निकाल देते हैं, नोटिस-पे भी नहीं देते। शौचालय बहुत-ही गन्दे रहते हैं।"

कूरियर कामगार : "मुख्यालय महीपालपुर, दिल्ली तथा कार्यालय हर प्रान्त, हर जिले में वाली **ब्लेजफ्लैश कूरियर** कम्पनी बी-370, 371 नेहरु ग्राउण्ड स्थित कार्यालय के 23 कर्मचारियों में से 15 कूरियरकर्मियों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3650 रुपये देती है और इन्सेन्टिव के 400-700 रुपये बन जाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-6 कर्मचारियों की ही हैं। कम्पनी हर तीसरे महीने रजिस्टर बदल देती है। कूरियरकर्मियों को अपनी साइकिलों पर चक्कर लगाने पड़ते हैं और मरम्मत का खर्च स्वयं वहन करना पड़ता है।"

ओसवाल इलेक्ट्रीकल्स वरकर : "48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट तथा 8 घण्टे की तीन शिफ्ट में करीब 1200 मजदूर **टी वी एस मोटरसाइकिल** तथा **ओरियन्ट पँखों** के पुर्जे बनाते हैं। आठ घण्टे बाद जबरन रोकते हैं और लगातार 16 घण्टे काम पर रोटी के मात्र 9 रुपये (थोड़े-से लोगों को 12 रुपये) देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मशीनें चलाने वालों को भी अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं।"

नोरदर्न टूल्स एण्ड गेजेज मजदूर : प्लॉट 330 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी** की पुल्ली बनती हैं। रविवार को भी जबरन ओवर टाइम — कोई छुट्टी नहीं, महीने के तीसों दिन काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। वर्षों से लगातार काम कर रहे 90 कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, मार्च की तनखा 3000 रुपये..... अप्रैल से तनखा 3500 कर दी की बात, लेकिन दिये 3000 ही हैं।"

शिवालिक एक्सपोर्ट्स श्रमिक : "प्लॉट 59 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में हेल्परों की तनखा 2600 रुपये। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150 से 170 रुपये। बाकी को पैसे 10 घण्टे ड्युटी अनुसार। रोज 10 घण्टे काम पर 26 दिन के कटिंग लेदरमैन को 3500-3600 रुपये, फेब्रिक चैकर को 5000, इम्ब्राइड्री ऑपरेटर को 5400-5700, काज-बटन ऑपरेटरों को 5800-5900 रुपये। यहाँ **ब्लेयर, फ्रान्सा** का माल बनता है। बीस दिन पर बनती एक सवेतन छुट्टी नहीं देते।"

वी एक्स एल टैक्नोलोजीज कामगार : "20/3 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में एक और छँटनी के लिये मैनेजमेन्ट ने जाल बुना है। स्थाई मजदूरों की सँख्या 400 से 93 कर चुकी कम्पनी ने 46 और की छँटनी के लिये माहौल बना कर 6 फरवरी को फैक्ट्री में तालाबन्दी की। वैसे, मैनेजमेन्ट इसे मजदूरों द्वारा गैर-कानूनी हड़ताल करना प्रचारित कर रही है। धरना दिये मजदूरों को फैक्ट्री गेट के सामने से हटवा कर 2 अप्रैल को कम्पनी ने पानी बन्द कर दिया। फरवरी, मार्च, अप्रैल के दौरान उप श्रमायुक्त तथा अतिरिक्त श्रमायुक्त की यूनियन और मैनेजमेन्ट से अलग-अलग 15-20 मीटिंगें हुई, इक्ट्ठी एक भी नहीं। अधिकतर बातें 7 बरखास्त, 4 निलम्बित तथा 41 के ट्रान्सफर पर होती और सरकारी साहब कहते कि कम्पनी मान नहीं रही। तीस अप्रैल के बाद ऐसी मीटिंगें भी नहीं.... इस पर 20 मई को फैक्ट्री गेट से मथुरा रोड़ पर बाटा मोड़ तक प्रदर्शन, 21 मई को फैक्ट्री गेट से गुडईयर चौक तक प्रदर्शन, 24 मई को उप श्रमायुक्त कार्यालय तक प्रदर्शन। श्रम अधिकारी व श्रम निरीक्षक 25 मई को मजदूरों के पास पहुँचे और प्रदर्शन नहीं करने, सामान्य स्थिति बहाल करने, बात करने को कहा। मैनेजमेन्ट के बुलावे पर 28 और फिर 30 मई को यूनियन नेताओं तथा कम्पनी अधिकारियों के बीच चर्चा हुई। हम मजदूरों को आज 1 जून को भी पता नहीं कि क्या बातें हुई। सेना के लिये बमों के फ्यूज तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरण बनाती कम्पनी स्थाई मजदूरों को निकाल कर कैजुअल वरकरों से काम करवाने के संग-संग फैक्ट्री से बाहर 50 वैन्डरों से उत्पादन करवाती रही है।"

सुपर एज वरकर : "प्लॉट 109 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में महीने में 150 से 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **यामाहा, बजाज, हीरो होण्डा** दुपहियों के पैट्रोल-टी तथा दुबई-कुवैत को निर्यात के लिये क्लैम्प बनते हैं। तनखा देरी से — अप्रैल की 15 मई को दी।"

प्रणव विकास मजदूर : "45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10-12 स्थाई मजदूर और 5-6 ठेकेदारों के जरिये रखे 250 वरकर **मारुति सुजुकी, स्कार्पियो, बुलेरो, टवेरा, एम्बेसडर** वाहनों के हीटर कॉयल तथा कूलिंग कॉयल बनाते हैं। महीने में 125 से 240 घण्टे ओवर टाइम के — स्थाई मजदूरों को भुगतान दुगुनी दर से और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को सिंगल रेट से। लगातार 16 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के पैसे नहीं देते। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को वर्ष में दो वर्दी देते थे पर इधर तीन वर्ष से नहीं दी हैं — 6 महीने पहले नाप लिये थे पर अब कहते हैं कि कैन्सल हो गये। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड मुश्किल से मिलता है और फण्ड के पैसे निकालने के लिये ठेकेदार 1000 रुपये रिश्वत लेले हैं।"

गुड़गाँव में मजदूर

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : " 292 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में मार्च की तनखा 300 कैजुअल वरकरों को 20 अप्रैल को दी थी और 3870 रुपये ही दी। अप्रैल का वेतन आज 15 मई तक नहीं दिया है। जुलाई 09 तथा जनवरी 10 से देय डी.ए. की राशियाँ कम्पनी नहीं दे रही। कैजुअलों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के मात्र 14 रुपये प्रतिघण्टा और मार्च में किये के पैसे 15 मई तक नहीं दिये हैं। कैजुअलों को 8 घण्टे बाद छोड़ते ही नहीं, चाहे बीमार हो, चाहे मजदूर मर ही जाये।"

भारत एक्सपोर्ट ओवरसीज श्रमिक : " 493 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। फिनिशिंग विभाग में हैल्परों को 8 घण्टे के 120-130 रुपये। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। पानी के लिये तीन फ्रिज हैं, तीनों खराब। शौचालय बहुत गन्दे रहते हैं।"

ओबरॉय होटल कामगार : "शंकर चौक के पास गुड़गाँव में पाँच सितारा होटल के निर्माण में लगे **स्टर्लिंग विलसन** के 300 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

पर्ल वरकर : "446 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में रात एक बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के पैसे नहीं देते। प्रतिदिन दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से – महीने में 130 घण्टे ओवर टाइम।"

राधनिक एक्सपोर्ट मजदूर : "215 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में पानी पीने, पेशाब करने जाने के लिये टोकन लेना पड़ता है। रात 2½ बजे तक रोकते हैं तब रोटी के 30 रुपये देते हैं, कैन्टीन में भोजन ठीक नहीं। महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से पर हस्ताक्षर दुगुनी दर पर करवाते हैं। पाँच सौ सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं – इन्हें ओम इन्टरप्राइज के वरकर दिखाते हैं पर कहते हैं कि बायर पूछें तो कहना कि राधनिक के मजदूर है।"

पोलीपैक श्रमिक : " 193 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में एक छुट्टी करने पर 4 साप्ताहिक अवकाश गायब कर देते हैं, 720 रुपये काट लेते हैं। सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और जबरन रात 12 बजे तक रोकते हैं। साढे बारह घण्टे के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान सिंगल रेट से भी कम। ठेकेदार के जरिये रखे 50 मजदूरों को 12½ घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 5400 रुपये।"

टोरस होम फर्निशिंग कामगार : " 418 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये, चैकरों की 3500 और सिलाई कारीगर पीस रेट पर। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में 10-15 के ही हैं। पानी ठीक नहीं। शौचालय गन्दे रहते है।"

– **कॉटेज क्राफ्ट वरकर :** " 6 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कम्पनी के कालीन शो रूम मजदूरों को फरवरी, मार्च, अप्रैल की तनखायें आज 15 मई तक नहीं दी हैं। दो वर्ष से पी.एफ. जमा नहीं कर रहे। तीन वर्ष से बोनस नहीं दिया है।"

कुरूबॉक्स, 199 फेज-1, मार्च की तनखा 7 मई को दी, अप्रैल की 15 मई तक नहीं ; **विम्पी इन्टरनेशनल,** 245 फेज-1, वर्ष में तीन जोड़ी वर्दी देते थे पर चार वर्ष से नहीं दी हैं ; **गोपाल क्लोथिंग,** 274 फेज-1, गाली देते हैं ; **चोयस एक्सपोर्ट,** 357 व 358 फेज-3, अप्रैल की तनखा 14 मई को दी पर निकाले हुओं को नहीं दी ; **गौरव इन्टरनेशनल,** 198 फेज-1, बहुत गाली देते हैं ; 659 फेज-5 में धागे काटती महिला मजदूरों की तनखा 3000 रुपये, पुरुष हैल्परों की 3000-3300 रुपये, गालियाँ व मारपीट......

आई एम टी मानेसर

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर: " प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 1800 स्थाई मजदूरों और 5500 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को लाने-ले जाने के लिये साँझी बसें थी पर अब कम्पनी स्थाई के लिये अलग और ठेकेदारों के जरिये रखों के लिये अलग बसों का प्रबन्ध कर रही है। स्थाई व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर एक ही गेट से आते-जाते थे पर अब स्थाई के लिये अलग और ठेकेदारों के ज़रिये रखों के लिये अलग गेट बना दिये गये हैं। सब मजदूरों को महीने में एक दिन 2 घण्टे का गेट पास लेने का अधिकार था पर अब यह स्थाई मजदूरों तक ही सीमित कर दिया है – लोग कम हैं कह कर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को गेट पास से वंचित किया जा रहा है। कम्पनी ने 8 घण्टे के लिये निर्धारित स्कूटर उत्पादन 1125 से बढा कर 1200 किया और नया टारगेट पूरा होने पर मिठाई बाँटी – स्थाई मजदूरों को ही मिठाई दी, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को मिठाई नहीं दी।"

गाँधी स्प्रिंग्स श्रमिक : " प्लॉट 154-डी सैक्टर-7 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में मजदूरों की तनखा 3400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यहाँ बच्चों से भी काम करवाते हैं।"

मुंजाल शोवा कामगार : " सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में तीन शिफ्टों में **हीरो होण्डा, यामाहा, होण्डा** फैक्ट्रियों तथा दुकानों के लिये शॉकर बनते हैं। स्थाई मजदूर बहुत-ही कम हैं। आई.टी.आई. किये 500 कैजुअल वरकर तथा चार ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूर हैं। कैजुअलों को 5 वर्ष में स्थाई करने का लालच देते हैं – कैजुअल से ट्रेनी से री-ट्रेनी से कैजुअल के फेर में रखते हैं, स्थाई नहीं करते। ठेकेदारों के जरिये रखों का भी 6 महीने में ब्रेक करते रहते हैं। आई टी आई की तनखा 4500 रुपये और ठेकेदारों के जरिये रखों की 4214 रुपये। तनखा कम है..... लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है, ओवर टाइम बहुत भारी पड़ता है। महीने में 100 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से कम, 35 रुपये प्रतिघण्टा।"

ओरियन्ट क्राफ्ट वरकर : " प्लॉट 15 सैक्टर-5 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में धागे काटने वाले 26 मजदूरों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है पर रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। जिस दिन बायर आते हैं उस रोज साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। महीने में 60-70 घण्टे ओवर टाइम पर 12-15 घण्टे ही पे-स्लिप में दिखाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से लेकिन रविवार को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम। कुछ सुपरवाइजर गाली देते हैं।"

जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 3 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 15 बसों में महिला मजदूर लाई-ले जाई जाती हैं। उनकी सुबह 8½ से साँय 5½ की शिफ्ट हैं और रात 8 तक काम करती 200 को छोटी गाड़ियाँ छोड़ने जाती हैं। पुरुष मजदूरों की सुबह 6 से साँय 6 और साँय 6 से अगली सुबह 6 बजे तक की दो शिफ्ट हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 14 रुपये प्रतिघण्टा।"

बजाज मोटर्स श्रमिक : "प्लॉट 22 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई, 100 कैजुअल, ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर.

दिल्ली.... (पेज चार का शेष)

ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 4800 और सिलाई कारीगरों की 6140 रुपये। भोजन अवकाश के बाद लगातार 6 घण्टे काम करना पड़ता है, बीच में कोई ब्रेक नहीं, बहुत परेशानी होती है। चेन सिस्टम है, काम का दबाव है। पीने का पानी खराब। शौचालय बहुत-ही गन्दे रहते हैं।"

शिवम् एक्सपोर्ट मजदूर : "ए-189 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है, दो महीने से रात 9 बजे छोड देते हैं। रविवार को साँय 5½ तक काम। धागा कटिंग में 8 घण्टे के 110 रुपये देते हैं और हर महीने 300-400 रुपये की गड़बड़ी भी करते हैं। सिलाई में 2 स्थाई हैल्परों की तनखा 5272 और 18 कैजुअल हैल्परों की 4000 रुपये (अप्रैल तक 3200 ही थी)। स्थाई सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 248 रुपये और कैजुअल टेलरों को 200 रुपये। कैजुअल सिलाई कारीगरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, 25 रुपये प्रतिघण्टा की दर से जबकि स्थाई टेलरों को सिंगल रेट से भी कम, 17 रुपये प्रतिघण्टा। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में 50-60 की ही हैं। जनरल मैनेजर बहुत गाली देता है, दादागिरी करता है।"

दिल्ली में मजदूर

1 फरवरी 2010 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 5272 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 5850 रुपये (8 घण्टे के 225 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये) /स्टाफ में स्नातक एवं अधिक: 7020 रुपये (8 घण्टे के 270 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054।

स्ट्रेन इम्ब्राइड्री मजदूर : "ए-254 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 15 अप्रैल को 20 वरकर साहब से मिले और बोले कि महँगाई इतनी बढ गई है, तनखा बढाओ। अप्रैल की तनखा में 400-500-600 रुपये बढाये गये। दस मई को 50 मजदूर साहब के पास गये और सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन माँगा। साहब बोला कि ग्रेड नहीं दे पाऊँगा पर पैसे बढाये। अब हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5200 और ऑपरेटरों को 6400-6500 रुपये। फैक्ट्री में 18 कम्प्युटर इम्ब्राइड्री मशीन हैं और 120 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 60 मजदूरों की ही हैं।"

सर्कल ऑफ एनिमल लवर्स श्रमिक : "ई-67, डी डी ए फ्लैट्स, साकेत में एक एन. जी. ओ. में काम करता हूँ। इस में हम कुल 30 मजदूर हैं — डॉक्टर, ड्राइवर, कुक, हैल्पर और ऑफिस स्टाफ। डॉक्टरों को 8 घण्टे ड्युटी पर महीने के 20,000 से ऊपर और ऑफिस स्टाफ को 6000 से 8000 रुपये। ड्राइवरों को 12 घण्टे रोज पर महीने के 6500 रुपये। कुक और हैल्परों को चौबीसों घण्टे ड्युटी पर महीने के 3000 से 5500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी वरकर की नहीं। यह एन. जी.ओ. कुत्तों की नसबन्दी का काम करता है जो कि दिल्ली सरकार द्वारा चलाये जा रहे कुत्तों के उन्मूलन कार्यक्रम का एक हिस्सा है। यूँ तो यह कार्य दिल्ली सरकार ने एम.सी.डी. को सौंपा है पर साहब लोग एन.जी.ओ. के जरिये सस्ते मजदूरों के माध्यम से इस कार्य को अंजाम दे रहे हैं। दिल्ली नगर निगम एक कुत्ते की नसबन्दी के 445 रुपये देती है और साथ में जगह व अन्य कई रियायतें। बिजली, पानी फ्री। एम्बुलेन्स के नाम पर खस्ता हाल गाड़ियाँ पर एन.जी.ओ. के नाम के कारण पुलिस द्वारा कोई रोक-टोक नहीं। एन.जी.ओ. संचालक मैडम मजदूरों को गाली देती है, हैल्परों पर चप्पल तक उठा लेती है। आफिस में रह रहे 15 मजदूर कुत्तों के नाम मिला होटलों का बचा हुआ खाना खाते हैं। पशुओं के नाम से मिलते डोनेशन में भी काफी हेराफेरी होती है। कुत्तों को पकड़ने से ले कर नसबन्दी करके छोड़ने तक की प्रक्रिया बहुत दर्दनाक है — कई कुत्ते मर जाते हैं जिन्हें चुपचाप रात में जँगलों में दफना दिया जाता है। मर जाते कुत्तों की इन्ट्री भी नसबन्दी रजिस्टर में की जाती है। दो डॉक्टरों को प्रतिदिन 30-40 कुत्तों का ऑपरेशन करना है..... डॉक्टर यह काम लड़कों से करवा रहे हैं। ऐसे में कुत्तों को अतिरिक्त पीड़ा और मृत्यु की सम्भावना बढ जाती है।"

पालम एक्सपोर्ट कामगार : "ए-205 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9, रात 1, अगली सुबह 5 बजे की शिफ्ट है। सिलाई कारीगरों को महीने में 15 रोज रात 1 बजे तक और 3-4 रोज सुबह 5 बजे तक रोकते हैं। फिनिशिंग विभाग के 100 मजदूरों को हर रोज सुबह 9½ से अगली सुबह 5 बजे तक काम करना पड़ता है। सुबह 5 बजे छूट कर 9½ बजे से फिर काम शुरू. .... पुरुष मजदूर फैक्ट्री में ही सो जाते हैं जबकि महिला मजदूर कमरों पर जा कर वापस आती हैं। सुबह 9½ से अगली सुबह 5 तक महीने के तीसों दिन काम से 50 महिला मजदूर मुर्दों की तरह हो गई हैं। एक 22 वर्षीय युवा ने 6-7 महीने सुबह 9½ से अगली सुबह 5 तक महीने के तीसों दिन काम किया पर वह अप्रैल-अन्त से ड्युटी नहीं आ रहा, डॉक्टर ने हृदय रोग बताया है। जबरन भी रोकते हैं और सरकारी अधिकारियों को मजदूर शिकायतें भी करते हैं। रात 11 बजे 14 मई को छापा पड़ा तब 400 मजदूर काम कर रहे थे। सरकारी अधिकारी रात 12 बजे तक फैक्ट्री में रहे और कम्पनी अधिकारियों को हड़काया। छापे के बाद दो दिन साँय 6 बजे सब को छोड़ा पर फिर वही पुराना ढर्रा। नया मैनेजर आया है 26 मई से और कहता है कि महीने में 90 दिहाड़ी कैसे लगी। नये साहब ने आदेश दिया है कि फुल नाइट लगने वाले मजदूरों की सूची दोपहर 4 बजे बनेगी..... पालम एक्सपोर्ट में कम्पनी ने जिन वरकरों को स्वयं रखा दिखाया है उन्हें दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, 5272 तथा 6448 रुपये देते हैं। कम्पनी जिन मजदूरों को ठेकेदार के जरिये रखा दिखाती है उन में सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और 8 घण्टे के नये हैल्परों को 100 रुपये, थोड़े पुरानों को 120-130 तथा 8-9 वर्ष से कार्यरत व पूरा काम जानने वालों को 150 रुपये मात्र देते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 250 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, हर महीने 300-400 रुपये की गड़बड़ी, गाली, तनखा देरी से — अप्रैल का वेतन 25 मई को दिया। स्थाई मजदूरों को भी तनखा देरी से, अप्रैल की 15 मई को दी पर ठेकेदार के जरिये रखे टेलरों को 7 तारीख को मिलती है क्योंकि बिना तनखा के 8 तारीख होने पर वे काम बन्द कर देते हैं। रात 1 बजे तक काम पर रोटी के स्थाई मजदूरों को 40 रुपये जबकि ठेकेदार के जरिये रखों को 25 रुपये, अगली सुबह 5 बजे तक काम पर स्थाई मजदूरों को रोटी के 97 रुपये जबकि ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को 57 रुपये देते हैं। पर हाँ, कम्पनी साँय 4 बजे चाय, रात 8 बजे चाय-समोसा, रात 11 बजे चाय, रात 3 बजे चाय सब मजदूरों को देती है।" **(बाकी पेज तीन पर)**

बुटीक इन्टरनेशनल वरकर : "डी-5/1 व डी-4/3 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम करते 600 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट,

जुड़ने—जोड़ने के लिये
मजदूर समाचार तालमेल

★ मिल कर कदम उठाने के लिये पहली जरूरत मिलने-जुलने के अवसरों की है। कारखानों में हम एकत्र होते हैं पर वहाँ सहज बातचीत पर अनेक रोक हैं। रोज 12-16 घण्टे की ड्युटियाँ और फिर आने-जाने में लगता समय, सब्जी-राशन लेना, पानी भरना, तेल-गैस के जुगाड़, भोजन बनाना अथवा बच्चों-पत्नी-पति के लिये समय। ऐसे में अधिकतर मजदूरों के लिये कहीं जा कर मिलने के लिये समय निकालना बहुत-ही मुश्किल है। ...... ऐसे में मजदूर समाचार तालमेल अपना प्रारम्भिक कार्य बस्तियों में मिलने-जुलने के लिये स्थानों का प्रबन्ध करने को बना रहा है। ....

★ संगठन में कोई पद नहीं होंगे। .... स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर, कर्मचारी, सब मजदूर संगठन के सदस्य बन सकते हैं। निजी स्तर पर आर्थिक सहयोग का स्वागत करेंगे परन्तु संस्थाओं से पैसे नहीं लिये जायेंगे।

★ मजदूर समाचार तालमेल पंजीकरण नहीं करवायेगा। कम्पनियों-सरकारों से संगठन बहस नहीं करेगा, उन्हें समझाने की कोशिशें नहीं करेगा, अधिकारियों के साथ समझौता वार्तायें नहीं करेगा। आमतौर पर संगठन प्रतिक्रियायें नहीं देगा। हम अपने हिसाब से कदम उठायेंगे और प्रतिक्रियायें देना कम्पनियों-सरकारों के पाले में रहने देंगे।......

★ हम आशा करते हैं कि कुछ महीनों में मिल कर कदम उठाने की वो स्थितियाँ बन जायेंगी कि सदस्य व अन्य मजदूर छोटी-छोटी राहत हासिल कर सकेंगे।.......

★ भारत सरकार के अधीन न्यायालयों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। ...

★ ...... आम मजदूर जो आसानी से कर सकते हैं वो करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया जायेगा।

★ .... संगठन पूरे विश्व में मजदूरों की पहलकदमियों के संग खासकरके और जनता की पहलकदमियों के संग आमतौर पर तालमेलों के लिये विशेष प्रयास करेगा।......

बैठकें :

1. सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने) अल्ला मोहल्ला, तेखण्ड — ओखला, दिल्ली। 2. वीरवार को गायकवाड़ नगर (फरीदाबाद न्यू टाउन स्टेशन के पास)।

3. रविवार को प्लॉट नं. 108, पुराने सरकारी स्कूल की बगल में, मुजेसर (फरीदाबाद)।

4. देशराज (कालू) का मकान, तालाब के पास, रामपुरा, गुड़गाँव।

5. कमरा नं. 25 लक्खीराम का मकान, गली नम्बर—6, कापसहेड़ा, दिल्ली।

6. मकान नम्बर 24, राजस्थान कॉलोनी, संजय मैमोरियल नगर, एन.एच. 4 फरीदाबाद।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011